छोटी कहानियां

Short Stories of Jainism

Different Stories

Story No.2

नाम में क्या है ?

मनुष्य अपने जीवन में खुद के नाम के पीछे इतना व्यस्त रहता है कि मानो उसके बगैरह कोई काम ही ना होता हो, जीवन की सब से बडी यह भूल है परंतु इतिहास कहता है कि नाम में क्या रखा है ? अच्छे काम करते रहो दुनिया की जुबां पर आपका नाम यूं हीं आता रहेगा बाकी नाम तो नाशवंत है ।

भरत महाराजा जब चक्रवर्ती बने अर्थात् पूरी दुनिया का एक ही राजा बने तब की यह घटना है । जब कोई चक्रवर्ती बनते है तो उन के पुण्यबल की व्यवस्था के अनुसार उनको ऋषभकुट पर्वत पर ले जाया जाता है और तक्षशिला नाम की गुफा में ले जाकर काकिणी रत्न से एक पथ्थर की शिला पर खुद का नाम अंकित करवाया जाता है ।

भरत महाराजाने वहां पहुंचकर देखा तो आश्चर्यचकित हो गए की यहां पर तो पथ्थर की शिला पर एक भी नाम लिखने की जगह नही बची है तो अब मैं मेरा नाम कहां लिखूंगा और कैसे लिखूंगा ?

मंत्रीश्वरने समजाते हुए कहा कि- हे राजन ! यहां किसी एक नाम को मिटाकर वहां अपना नाम लिखना होता है बस, यह सुनते ही उनकी अंतर आत्मा जग गई उसी दिन से राज्य व्यवस्था सम्हालने के बावजूद भी प्रति पल अंतर अवस्था को वैराग्यवासीत कर दी और बिना नाम वो करते रहे सारे काम... फलस्वरूप जिस को हम आज भी भारत के रूप में जानते है ।

मेरा आप से एक ही अनुरोध है कि- बिना नाम करो सारे काम ताकि दुनिया ढूंढे आप का नाम...

नाम में क्या है वो तो बिलकुल नाशवंत है ।

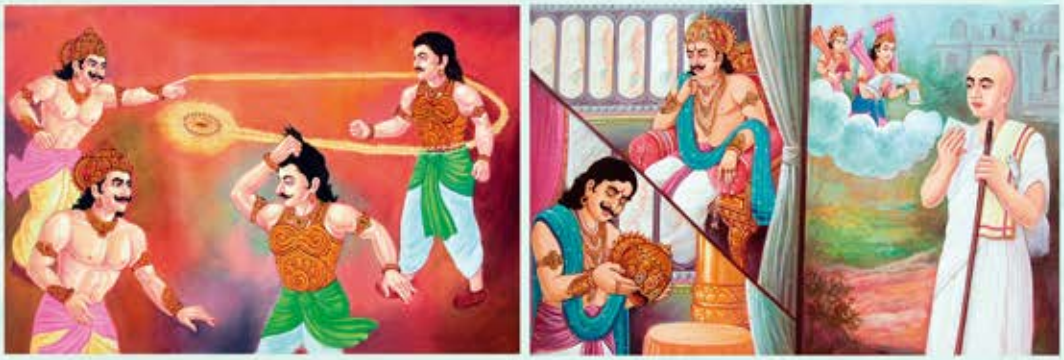

What is in a Name ?

Human beings are so busy in life pursuing their name as if without them no work can be completed, which is life's biggest mistake as even History speaks "What is in a Name"? Keep doing good deeds and your name will automatically come up on the lips of others, besides name is perishable or mortal.

Once Bharat Maharaja became a Chakravarti king, which means he was the King of the entire world. When a King becomes a Chakravarti, to respect his immense power, he is taken to Rishabhkut Hill and in a cave named Takshashila, he writes his name on a stone with a Kakini Jewel.

Bharat Maharaja was surprised that there was no space remaining anywhere to write his name and he wondered where he would write his name. His minister then said to him – Hey King, you have just to erase one of the earlier names and write your name in its place. On hearing this, his inner soul was awakened and from that day, in spite of his having to take care of the everyday needs of his kingdom, his inner soul was bent towards abstinence and he kept on doing good deeds without bothering to publicize his name. As a result, we see that our country is known by the name Bharat.

My request to one and all is – Keep doing good deeds without bothering about fame so that the world searches for your name.

Courtesy by : एक सद्गृहस्थ गुरुभक्त परिवार